

# अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे? : तर्क और विज्ञान की यात्रा

अरविन्द कुमार सिंह

आनन्द विद्यार्थियों का एक स्वाभाविक गुण है। कहानी की सार्थकता आनन्द का स्रोत बनने में है। और, शिक्षा भी तभी सार्थक है जब वह आनन्द की अनुभूति का माध्यम बन सके। लेख में इन विचारों के तालमेल से कहानी का उपयोग करते हुए शिक्षण की ऐसी प्रक्रिया अपनाई गई है जिसमें विद्यार्थी आनन्द और रुचि के साथ सीखते हैं। इस दौरान वे सोचने-विचारने, तर्क करने, अनुमान लगाने और विज्ञान के सिद्धान्त को परखने के अवसर भी पाते हैं।

पिछले दिनों 'बस एक कहानी' गतिविधि के दौरान कक्षा में लेखक और चित्रकार इन्दु हरिकुमार की पुस्तक *अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?* पढ़ाने का अवसर मिला। मैं काफ़ी समय से कक्षा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को कहानी सुना रहा हूँ, लेकिन *पाठशाला भीतर और बाहर* के अंक 20 में दीपाली शुक्ला का लेख 'मैटी, बैठ जाओ! बैठ जाओ मैटी!' पढ़कर मेरी एक नई समझ विकसित हुई कि एक कहानी विद्यार्थियों को सीखने, समझने और सोचने के असीमित अवसर प्रदान करती है। *अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?* कहानी शिक्षण के दौरान कक्षा में की गई गतिविधि को हम आपके साथ साझा कर रहे हैं—

“

**भाषा में शब्दकोश का कितना महत्व है, यह मुझे विद्यार्थियों के जवाब पढ़कर पता चल रहा है।**

”

इस पुस्तक को पढ़ने से पहले मैंने विद्यार्थियों को इसका कवर पेज दिखाया जिस पर 'अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?' लिखा था। विद्यार्थियों से सवाल किया कि आपके विचार से यहाँ पर अप्पुकुट्टन क्या / कौन हो सकता है? चूँकि हम उत्तर भारत में रहते हैं, और अप्पुकुट्टन यहाँ पर आम चलन में आने वाला शब्द नहीं है इसलिए विद्यार्थी थोड़ी देर असमंजस में रहे। उन्हें फिर से शीर्षक पढ़ने को बोला। उन्हें समझाया कि आपको शीर्षक पढ़कर यह तो समझ आ रहा है न कि अप्पुकुट्टन कुछ तो ऐसा है जिसका हम वज़न कर सकते हैं, जिसे तौला जा सकता है। जिस प्रकार आप लोग किसी दुकान पर सामान लेने जाते हैं तब दुकानदार तराजू से तौलकर वस्तुएँ देता है। इसी तरीके से अप्पुकुट्टन भी ऐसा कुछ हो सकता है। विद्यार्थियों के जवाब कुछ इस तरह के थे—

देशराज : यह एक राजा होगा, नाम देखकर ऐसा ही लगता है।

आदर्श : आम होगा, हमने तो अपने मन से सोचकर लिखा है।

करिश्मा : तरबूज़ होगा क्योंकि उसे तौला जा सकता है।

सुनयना : कुट्टू का आटा (जो व्रत के दौरान खाया जाता है), अप्पुकुट्टन का नाम सुनकर मुझे ऐसा लगा।

मीनाक्षी : अप्पुकुट्टन एक आम होगा।

मानसी : अप्पुकुट्टन एक लड़का है।

कार्तिक : अप्पुकुट्टन एक सब्जी होगी जिसे तौला जा सकता है।

पल्लवी : अप्पुकुट्टन सन्तरा होगा क्योंकि वे तौले जा सकते हैं।

मालती : बन्दगोभी हो सकती है। अप्पुकुट्टन मुझे बन्दगोभी जैसा नाम लगा।

मिताक्षी : अप्पुकुट्टन हाथी होगा क्योंकि अप्पुकुट्टन का नाम हाथी के जैसा लगा।

भाषा में शब्दकोश का कितना महत्व है, यह मुझे विद्यार्थियों के जवाब पढ़कर पता चल रहा है। अप्पुकुट्टन दक्षिण भारत में प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। यह उत्तर भारत के विद्यार्थियों के लिए यह बिल्कुल नया शब्द है। विद्यार्थियों के जवाब अनुमान और तर्क पर आधारित हैं। एक विद्यार्थी ने अप्पुकुट्टन को कुट्टू का आटा बताया है जो व्रत के दौरान खाया जाता है। एक विद्यार्थी ने अप्पुकुट्टन शब्द की वर्ण संरचना के आधार पर यह अनुमान लगाया कि जैसे बन्दगोभी में बहुत सारी परतें होती हैं उसी प्रकार अप्पुकुट्टन भी कुछ ऐसी ही अजीब-सी चीज़ होगी। कुछ विद्यार्थियों के जवाब का आधार आम, सन्तरा, तरबूज़ जैसी



चित्र 1 : प्रयोग के माध्यम से हाथी को तौलने का तरीका समझते विद्यार्थी

वस्तुएँ थीं जो तौली जा सकती हैं। इसी प्रकार, एक विद्यार्थी ने थोड़ा और सोचकर यह अनुमान लगाया कि अप्पुकुट्टन एक हाथी होगा। यदि कहानी में अप्पुकुट्टन के स्थान पर शेरू, टॉमी, कालू, भूरा होता तो सम्भवतः सभी विद्यार्थी यह अनुमान लगाते कि यह एक कुत्ता होगा। यदि कहानी में अप्पुकुट्टन के स्थान पर सोहन, राजुल, देशराज, कार्तिक होता तो सभी विद्यार्थी अनुमान लगाते कि यह एक लड़का होगा। किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित शब्द किसी विद्यार्थी के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं, यहाँ स्पष्ट हो रहा था।

फिर मैंने विद्यार्थियों को कहानी का पहला हिस्सा सुनाया—

कहानी है यह एक खास राज्य की। एक खुशहाल और सम्पन्न राज्य की। जवाबों की दुनिया की...

जहाँ सवाल आया नहीं कि लोग जवाब ढूँढ़ने में जुट जाते थे। कोई भी सवाल छूट न पाता।

लेकिन एक दिन एक सवाल ऐसा आया कि उसने खलबली मचा दी।

लोग थमे, बाल नोचे। बहुत सिर खुजलाया। और सोचा, "अब इसे कैसे सुलझाएँ?"

हुआ यह कि सबसे छोटा राजकुमार अप्पुकुट्टन को नाश्ता करा रहा था।

उधर अप्पुकुट्टन लज़ीज़ नाश्ता गड़पने में लगे थे, इधर नन्हे राजकुमार के दिमाग में एक कीड़ा कुलबुलाया। उसका सवाल था बड़ा सरला वह जानना चाहता था,

"अप्पुकुट्टन का वज़न कितना है?"

कहानी का इतना हिस्सा सुनाने के बाद विद्यार्थियों से सवाल किया, "तुम्हारे विचार से यहाँ पर अप्पुकुट्टन क्या/कौन हो सकता है?" इस बार नई जानकारी के आधार पर उनके जवाब थे—

देशराज : अप्पुकुट्टन हाथी होगा क्योंकि उसको खाना खिलाया जाता होगा।

आदर्श : वह गाँव का प्रधान हो सकता है। अपने मन से सोचकर लिख दिया।

करिश्मा : एक हाथी हो सकता है क्योंकि हाथी खाना खा सकता है।

सुनयना : कोई लड़का होगा। अप्पुकुट्टन के बारे में मैंने पहले ही सोच लिया था।

मानसी : अप्पुकुट्टन मुझे बिल्ली लगती है।

पल्लवी : अप्पुकुट्टन मोर होगा क्योंकि मोर खाना खा सकता है।

सुधांशु : अप्पुकुट्टन भैंस हो सकती है। भैंस का वज़न भी ज़्यादा होता है, और वह खाना भी खा लेती है।

प्रभा : अप्पुकुट्टन एक बिल्ली हो सकती है। नाम कुछ वैसा लग रहा है।



चित्र 2 : तौलने की गतिविधि के दौरान सोचते, सवाल पूछते विद्यार्थी

मालती : अप्पुकुट्टन एक कौवा हो सकता है क्योंकि कौवा खाना खाता है।

इस बार के अनुमान सूचना-आधारित थे। अप्पुकुट्टन उनके लिए बेशक नया शब्द था, लेकिन वे इस बार यह समझ पा रहे थे कि अप्पुकुट्टन कुछ ऐसा है जो खाना खा सकता है, और उसका वज़न भी है। इसी आधार पर वे अनुमान लगा रहे थे कि अप्पुकुट्टन पशु, पक्षी अथवा मनुष्य हो सकता है।

फिर विद्यार्थियों को कहानी का अगला भाग सुनाया गया—सवाल सुनकर नौकर-चाकरों का सिर चकराया। उन्होंने कहा,

"यह तो कोई आसान काम नहीं!"

जल्द ही यह सवाल राज दरबार से निकलकर घरों, सड़कों, खेतों और मैदानों में पहुँचा। देखते-ही-देखते लोगों के दिमाग में एक ही सवाल था, "अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?" "क्या तराजू नहीं थे उनके पास?"

"उन्होंने तौल मशीन पर खड़ा कर अप्पुकुट्टन का वज़न क्यों नहीं लिया?"

तराजू तो थे। बल्कि खास तराजू बनाए भी गए, पर...

कुछ अप्पू के लिए छोटे पड़ गए।

कुछ उसके पैर रखते ही टूट गए।

कहानी का अगला अंश सुनाने के बाद फिर से पूछा, "अब बताओ अप्पुकुट्टन क्या होगा?" इस बार विद्यार्थी नई जानकारी के आधार पर जवाब देने वाले थे—

देशराज : हाथी होगा।

आदर्श : हाथी राजा।

करिश्मा : एक हाथी होगा।

सुनयना : अप्पुकुट्टन कोई पत्थर होगा।

मीनाक्षी : अप्पुकुट्टन मुझे लगा कि एक भारी हाथी होगा।

मानसी : अप्पुकुट्टन एक हाथी होगा।

पल्लवी : अप्पुकुट्टन हाथी होगा।

सुधांशु : हाथी हो सकता है।

प्रभा : अप्पुकुट्टन एक भालू हो सकता है।

मालती : एक पत्थर होगा।

“**कहानी की मुख्य पात्र 'मीनू' कोई और नहीं, हमारी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी ही हैं जो अपनी समझ से उस सवाल का जवाब ढूँढ़ते हैं। बस, हमको उस राज्य के राजा की भाँति उन्हें सोचने, समझने और जवाब देने के पर्याप्त मौके देने होते हैं।**”

इस बार विद्यार्थियों को एक नई सूचना प्राप्त हुई थी कि अप्पुकुट्टन कुछ ऐसी चीज़ है जो बहुत भारी है, जिसके पैर रखते ही तराजू टूट गया। इस आधार पर विद्यार्थियों ने जो सबसे भारी जानवर आज तक देखा है, उन्होंने अपने जवाब के रूप में चुन लिया—हाथी। कुछ विद्यार्थियों ने पुरानी सूचना को, कि वह खाना खा लेता है, भुलाकर इस आधार पर, कि पैर रखते ही तराजू टूट गया, अपना नया जवाब पत्थर बताया। अब विद्यार्थियों को कहानी का अगला अंश सुनाया गया—

कुछ और को देखकर लोगों ने कहा, "अब अप्पुकुट्टन को कैसे तौलें?"

तुम समझ ही गए होंगे कि यहाँ बात एक हाथी की हो रही है। और हाथी भी कोई ऐसा-वैसा नहीं, एक सम्पन्न राज्य का शाही हाथी।

और इसी तरह शाही हाथी का वज़न शाही चिन्ता का विषय बन गया।

यहाँ मैंने विद्यार्थियों से पूछा, "तुम्हारे विचार से अप्पुकुट्टन को कैसे तौल सकते हैं?" सभी विद्यार्थियों ने एक-सा जवाब दिया, "तराजू या काँटे से तौल सकते हैं।" जैसा कि हम जानते हैं, विद्यार्थी दुकान से अपने घर का सामान लाते हैं, और उन्होंने वहाँ तराजू देखी है। इसके अलावा, वे कभी-कभी अपने माता-पिता के साथ अनाज बेचने जाते हैं जहाँ उन्होंने बड़े-बड़े काँटे देखे हैं। इन काँटों पर उनके अनाज की बुगियाँ तौली जाती हैं। इसलिए उन्होंने अपने अनुमान में केवल दो ही चीज़ बताई हैं—तराजू या काँटे से अप्पुकुट्टन को तौल सकते हैं।

विद्यार्थियों को कहानी का और आगे का हिस्सा सुनाया गया—

तब नन्ही मीनू को एक ख्याल आया। "अरे, यह तो बड़ा आसान है," उसने सोचा और चल दी दरबार की ओर।

राजा ने सुना। सुना और सोचा। सोचा और कहा,

"इस बच्ची के आदेशों का पालन किया जाए। हाथी तुले न तुले, पर बच्ची की सूझ-बूझ, वाह भाई वाह!"

सभी चल दिए नदी की ओर—मीनू, दरबारी और अप्पुकुट्टन।

अप्पू को एक नाव में खड़ा किया गया।

देखते-देखते नाव डूबने लगी। और... और... और...।

जब नाव ठहरी तो मीनू ने वहाँ निशान लगा दिया जहाँ तक नाव नदी में डूबी हुई थी।

अप्पू को नाव से उतारा गया।

फिर नाव में ईंटें रखी गईं। ईंटें बढ़ती गईं और नाव फिर डूबने लगी, और... और... और...।

जब पानी नाव पर लगे निशान तक पहुँचा तो मीनू चिल्लाई, "बस, बस। अब और ईंटें न रखें।"

फिर ईंटें तौली गईं। बस, इस तरह पता लगा अप्पुकुट्टन का वज़न। पता है, कितना भारी था वह!

5,000 किलो...

पूरे 5,000 किलो!

कहानी के अन्तिम पड़ाव में आप देख पा रहे हैं कि हाथी को किस प्रकार से तौला गया? जब यह कहानी विद्यार्थियों को सुना दी तब उनसे जानना चाहा कि आप लोग समझ पा रहे हैं कि हाथी का वज़न नाव की मदद से कैसे पता किया गया होगा? तब विद्यार्थियों ने मेरी खुशी के लिए 'हाँ' में गर्दन हिला दी। शिक्षक होने के नाते मैं समझ पा रहा था कि कक्षा 3 के विद्यार्थी यह बात नहीं समझ पाए होंगे कि हाथी के वज़न को नाव की मदद से भी तौल सकते हैं। इसके लिए मुझे अपने बचपन में पढ़े हुए एक वैज्ञानिक आर्किमिडीज़ के सिद्धान्त की याद आई। उसके बाद मैंने उन्हें 'प्यासा कौवा' कहानी सुनाई। किस प्रकार प्यासा कौवा घड़े में पत्थर डालकर पानी के तल को ऊपर लाकर अपनी प्यास बुझाता है। इसके बाद उन्हें आर्किमिडीज़ के सिद्धान्त पर आधारित कुछ प्रयोग करके दिखाए। विद्यार्थियों ने कई सवाल किए। उन्हें यह बात समझ में आ गई कि किस प्रकार नाव की मदद से हाथी का वज़न तौला गया होगा।

इस पुस्तक के कवर पेज के मध्य में लिखा है—'अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?' और उसके चारों ओर व्यक्ति उस सवाल की ओर देख रहे हैं। वास्तव में, यदि देखा जाए तो हमारी कक्षाओं में भी ऐसा ही होता है। जब हम कोई सवाल पूछते हैं तो सभी विद्यार्थी सवाल पूछने वाले की ओर देखते हैं। यह पुस्तक किसी राज्य की कहानी न होकर हमारी कक्षाओं की कहानी—सी लगती है।

हमारी कक्षाओं में भी ऐसा ही होता है। जब कोई सवाल आता है तो सारे विद्यार्थी उस सवाल का जवाब ढूँढ़ने में लग जाते

हैं। अप्पुकुट्टन कोई हाथी नहीं, अपितु हर रोज़ आने वाला वह सवाल है जिसका जवाब अधिकांश विद्यार्थियों को नहीं पता होता। कहानी की मुख्य पात्र 'मीनू' कोई और नहीं, हमारी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी ही हैं जो अपनी समझ से उस सवाल का जवाब ढूँढ़ते हैं। बस, हमको उस राज्य के राजा की भाँति उन्हें सोचने, समझने और जवाब देने के पर्याप्त मौक़े देने होते हैं। *अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?* कहानी के बारे में सोचते हुए

विद्यार्थी शुरुआत से ही उससे खुशी के साथ जुड़े रहते हैं। हर हिस्से को सुनने के बाद उनकी रुचि कहानी में बढ़ती ही जाती है। आमतौर पर कक्षा शिक्षण में किसी कहानी को केवल विद्यार्थियों को आनन्द देने व उनमें रुचि जाग्रत करने के लिए ही पढ़ाया जाता है, लेकिन यह कहानी विद्यार्थियों को सीखने-सिखाने के बहुत सारे अवसर देती है, साथ ही उन्हें अनुमान, तर्क और विज्ञान की यात्रा पर ले जाती है।



**अरविन्द कुमार सिंह** प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश में 9 वर्षों से अध्यापन कर रहे हैं। उन्हें उत्कृष्ट शैक्षणिक नवाचारों के लिए 'राष्ट्रीय नवाचारी शिक्षा रत्न सम्मान 2023-24' से सम्मानित किया गया है। उनके सहयोग से विद्यार्थी तीन वर्षों से *उड़ान दीवार* पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं।

सम्पर्क : arv.kiet2011@gmail.com

इस बार दिसम्बर विशेषांक की थीम है

## अंग्रेज़ी शिक्षण : चुनौतियाँ व प्रयास

विशेषांक के लिए शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों  
के अनुभवों पर आधारित आलेख  
आमंत्रित हैं।

लेख भेजने की अन्तिम तिथि है

**30 अगस्त 2026**

कृपया आलेख भेजें

[pathshala@apu.edu.in](mailto:pathshala@apu.edu.in)